द्वितीय खण्ड

ठाकुर श्रीरामकृष्ण दक्षिणेश्वर-मन्दिर में भक्तों के संग

प्रथम परिच्छेद

(कामिनी-काञ्चन ही योग में व्याघात— साधना और योग-तत्त्व)

श्रीरामकृष्ण दक्षिणेश्वर-मन्दिर में भक्तों के संग में रह रहे हैं। बृहस्पतिवार, श्रावण शुक्ला दशमी तिथि, 24 अगस्त, 1882 ईसवी।

आजकल ठाकुर के पास हाजरा महाशय, रामलाल, राखाल आदि रहते हैं। श्रीयुक्त रामलाल ठाकुर के भतीजे हैं— काली-मन्दिर में पूजा करते हैं। मास्टर (श्री म) ने आकर देखा कि उत्तर-पूर्व के लम्बे बरामदे में ठाकुर हाजरा के निकट खड़े हुए बातें कर रहे हैं। उन्होंने (श्री म ने) आकर भूमिष्ठ होकर ठाकुर की श्रीचरण-वन्दना की।

ठाकुर सहास्यवदन! मास्टर से कहते हैं— ''और दो-एक बार ईश्वर विद्यासागर को मिलने का प्रयोजन है। (दुर्गा-पूजा के समय तैयार किया हुआ) चलचित्र एक बार रफ (कच्चा) अंकित करके फिर बैठकर रंग लगाया जाता है। मूर्ति पहले एक बार मिट्टी की बनती है, फिर तब खड़िया मिट्टी, तत्पश्चात् रंग— एक के पश्चात् एक करना होता है। ईश्वर विद्यासागर का सब तैयार है, केवल ढका हुआ है। कितने सारे सत्काम किए हैं— किन्तु अन्तर में क्या है, जानता नहीं। अन्तर में सोना ढका हुआ है। अन्तर में ईश्वर हैं, जान सकने पर सब काम छोड़कर, व्याकुल होकर उन्हें पुकारने की इच्छा होती है।

ठाकुर खड़े होकर मास्टर के साथ बातें करते हैं, और फिर कभी-कभी बरामदे में टहलते हैं।

(साधना— कामिनी-काञ्चन का झड़-तूफान काटने के लिए)

श्रीरामकृष्ण— अन्तर में क्या है, जानने के लिए थोड़ा साधन चाहिए।

मास्टर— साधन क्या सर्वदा करना चाहिए?

श्रीरामकृष्ण— नहीं, पहले तो थोड़ा उठ पड़ लगना चाहिए। फिर और अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ेगा। जितनी देर तरंग, आँधी-तूफान और टेढ़े-मेढ़े स्थान के पास से जाना होता है, उतनी देर ही माँझी को खड़े होकर पतवार पकड़नी होती है— उतना-सा पार हो जाने पर, फिर और नहीं। यदि मोड़ पार हो जाए और अनुकूल हवा बहे, तब माँझी आराम से बैठ जाता है, पतवार पर हाथ ही रखे रहता है। फिर पाल टाँगने का बन्दोबस्त करके तम्बाकू तैयार करने बैठ जाता है। कामिनी-काञ्चन का झड़-तूफान कटने पर ही तब शान्ति।

(ठाकुर श्रीरामकृष्ण और योग-तत्त्व— योग-भ्रष्ट,
योगावस्था— 'निवात-निष्कम्पमिव प्रदीपम्'— योग का व्याघात)

''किसी-किसी में योगी का लक्षण दिखाई देता है। किन्तु उन्हें भी सावधान होना उचित है। कामिनी-काञ्चन ही योग का व्याघात है। योग-भ्रष्ट होकर संसार में आकर गिर जाता है— शायद भोग की वासना कुछ थी। वह पूरी हो जाने पर फिर दोबारा ईश्वर की ओर आएगा, फिर वही योग की अवस्था। सठका कल जानते हो?

मास्टर— जी नहीं, देखी नहीं।

श्रीरामकृष्ण— उस देश में होती है। बाँस को आगे को मोड़कर रखते हैं। उस में वंशी लगाकर रस्सी बन्धी हुई रहती है। वंशी में चारा (खाद्यपदार्थ) लगा रहता है। मछली ज्यों ही चारा खाती है, त्यों ही तड़ाक करके बाँस उठ जाता है। जैसे ऊपर ऊँचे की ओर बाँस का मुख था, उसी प्रकार ही हो जाता है।

''निक्ति (छोटी तराजू) में एक ओर भार पड़ने से नीचे का काँटा ऊपर के काँटे के संग एक हो जाता है। नीचे का काँटा मन है— ऊपर का काँटा ईश्वर है। नीचे के काँटे का ऊपर के काँटे के साथ एक होने का नाम है योग।

''मन स्थिर न हो तो योग नहीं होता। संसार-हवा मन रूप दीप को सर्वदा चञ्चल करती रहती है। वह दीप यदि बिल्कुल भी न हिले तो फिर ठीक योग की अवस्था हो जाती है।

''कामिनी-काञ्चन ही योग का व्याघात है। वस्तु-विचार करोगे। स्त्री के शरीर में क्या है! रक्त, मांस, चर्बी, आँतें, कृमि, मूत्र, विष्ठा— यही सब। ऐसे शरीर के ऊपर प्यार क्यों!

''मैं राजसिक भाव का आरोप किया करता था— त्याग करने के लिए। साध (कामना) हुई, सुच्ची जरी की पोशाक पहनूँ, उँगली में अँगूठी डालूँ, नल द्वारा हुक्के में तम्बाकू पीऊँ। सुच्ची जरी की पोशाक पहनी। इन्होंने (मथुरबाबू ने) ला दी। कुछ क्षण बाद मन से कहा— मन, इसका नाम है सुच्ची जरी की पोशाक! तब उसे उतार कर फेंक दिया। फिर अधिक अच्छी नहीं लगी। कहा, मन! इसी का नाम है शाल, इसी का नाम है अँगूठी, इसी का नाम है नल द्वारा हुक्के में तम्बाकू पीना। उन सब को जब फेंक दिया तो फिर मन नहीं चला।''

सन्ध्या आगत प्राय:। घर के दक्षिण-पूर्व के बरामदे में, कमरे के द्वार के निकट ठाकुर मणि के साथ अकेले में बातें करते हैं।

श्रीरामकृष्ण *(मणि के प्रति)*— योगी का मन सर्वदा ही ईश्वर में रहता है, सर्वदा ही आत्मस्थ। चक्षु आश्चर्यचकित, देखते ही पता लग जाता है। जैसे पक्षी अण्डे सेता है— सारे का सारा मन उसी अण्डे की ओर। ऊपर नाम मात्र को देख रहा है! अच्छा, मुझे वह छवि दिखला सकते हो?

मणि— जी, अच्छा। मैं चेष्टा करूँगा यदि कहीं पाऊँ।

द्वितीय परिच्छेद

(गुरु-शिष्य संवाद— गुह्य कथा)

सन्ध्या हो गई। फरास (फर्राश, लैम्प आदि जलाने वाले सेवक) ने श्रीकाली-मन्दिर और श्रीराधाकान्त-मन्दिर और अन्य कमरों, स्थानों पर बत्तियाँ जला दीं। ठाकुर छोटी खाट पर बैठे हुए जगन्माता का चिन्तन और तत्पश्चात् ईश्वर का नाम कर रहे हैं। घर में धूप-धूना दे दिया गया है। एक ओर एक लैम्प-स्टैण्ड पर प्रदीप रखा हुआ है। कुछ क्षण पश्चात् शंख-घण्टा बज उठा। श्रीकाली- मन्दिर में आरती हो रही है। शुक्ला दशमी तिथि, चारों ओर चाँद का आलोक है।

आरती के कुछ क्षणों पश्चात् श्रीरामकृष्ण छोटी खाट पर बैठे हुए मणि के साथ एकाकी नाना विषयों पर बातें करते हैं। मणि फर्श पर बैठे हैं।

(कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन)

श्रीरामकृष्ण *(मणि के प्रति)*— निष्काम कर्म करोगे। ईश्वर विद्यासागर जो कर्म कर रहा है, वह अच्छा काज है; निष्काम कर्म करने की चेष्टा कर रहा है।

मणि— जी हाँ, अच्छा! जहाँ पर कर्म है, वहाँ पर क्या ईश्वर मिलते हैं? राम और काम क्या एक संग में होते हैं? हिन्दी में उस दिन एक बात पढ़ी थी : ''जहाँ राम तहाँ काम नहीं, जहाँ काम तहाँ नाहीं राम।''

श्रीरामकृष्ण— कर्म सब ही करते हैं। उनका नाम-गुणगान करना— यह भी कर्म है। सोऽहंवादियों का 'मैं ही वह हूँ'— यह चिन्तन भी कर्म है। नि:श्वास छोड़ना— यह भी कर्म। कर्म-त्याग तो किया ही नहीं जाता। तभी, कर्म तो करेगा, किन्तु फल ईश्वर में समर्पण करेगा।

मणि— जी, जिससे धन अधिक हो— यह चेष्टा क्या कर सकता है?

श्रीरामकृष्ण— विद्या के संसार के लिए किया जा सकता है। अधिक कमाने की चेष्टा करोगे किन्तु सदुपाय से। उपार्जन करना तो उद्देश्य नहीं है। ईश्वर

की सेवा करना ही उद्देश्य है। रुपये से यदि ईश्वर की सेवा होती है तो उस सेवा में दोष नहीं है।

मणि— अच्छा जी, परिवार वालों के प्रति कर्त्तव्य कब तक है?

श्रीरामकृष्ण— उनको खाने-पहनने का कष्ट न रहे। किन्तु सन्तान के स्वयं समर्थ हो जाने पर फिर उनका भार लेने का प्रयोजन नहीं। पक्षी का बच्चा जब स्वयं खोज कर खाना सीख लेता है, फिर माँ के पास खाने के लिए आने पर माँ चोंच मारती है।

मणि— कर्म कब तक करना होगा?

श्रीरामकृष्ण— फल प्राप्त हो जाने पर फिर फूल नहीं रहता। ईश्वर प्राप्त हो जाने पर फिर कर्म करना नहीं पड़ता, मन भी नहीं लगता।

''मतवाला अधिक मद पी लेने पर होश नहीं रख सकता। दो आना पी लेने पर काज-कर्म चल सकता है। ईश्वर की ओर जितना ही बढ़ेंगे, उतना ही वे कर्म कम कर देंगे। भय नहीं है। गृहस्थ की बहू के गर्भवती होने पर सास क्रमश: कर्म कम कर देती है। दस महीने हो जाने पर बिल्कुल भी कर्म नहीं करने देती। बच्चा हो जाने पर उसी को लिए व्यस्त रहती है।

''जो कुछ कर्म हैं, उनके समाप्त हो जाने पर ही निश्चिन्ती है। गृहिणी घर का पकाना-बाँटना तथा और काज-कर्म समाप्त करके जब नहाने जाती है, तब फिर लौटती नहीं; तब पुकारने पर भी नहीं आएगी।''

(ईश्वर-लाभ और ईश्वर-दर्शन क्या है ? उपाय क्या ?)

मणि— जी, 'ईश्वर-लाभ'— इसके क्या अर्थ हैं? और 'ईश्वर-दर्शन' किसे कहते हैं? और कैसे होता है?

श्रीरामकृष्ण— वैष्णव कहते हैं ईश्वर के मार्ग पर जो चल रहे हैं, और जिन्होंने उनको प्राप्त कर लिया है, उनकी श्रेणियाँ हैं— प्रवर्त्तक, साधक, सिद्ध और सिद्धों का सिद्ध।

जो अभी-अभी पथ पर चलने लगा है, उसे **प्रवर्त्तक** कहते हैं।

जो साधन-भजन करता है— पूजा, जप, ध्यान, नाम-कीर्त्तन करता है, वह व्यक्ति **साधक** है।

जिस व्यक्ति ने 'ईश्वर हैं', यह बोधे-बोध कर लिया है, उसको **सिद्ध** कहते हैं। जैसे वेदान्त की उपमा है— अन्धेरे कमरे में बाबू लेटे हुए हैं। बाबू को एक व्यक्ति टटोलते-टटोलते खोजता है। एक काउच पर हाथ लगाकर कहता है, 'यह नहीं'; खिड़की पर हाथ लगने पर कहता है, 'यह नहीं'; दरवाजे पर हाथ लगाकर कहता है, 'यह नहीं'। नेति, नेति, नेति! अन्त में बाबू की देह पर हाथ पड़ जाता है। तब कहता है, 'यहाँ पर, यही बाबू है'— अर्थात् 'अस्ति' का बोध हो गया। बाबू तो प्राप्त हो गया किन्तु विशेष रूप में नहीं पता लगा।

''एक और श्रेणी है, जिसे कहते हैं **सिद्धों का सिद्ध**। बाबू के साथ यदि विशेष आलाप हो जाए तो फिर और एक प्रकार की अवस्था होती है, यदि ईश्वर के संग प्रेम-भक्ति द्वारा विशेष आलाप होता है।
जो सिद्ध है उसने ईश्वर को चाहे पा तो लिया है, किन्तु जो सिद्धों का सिद्ध है, उसने ईश्वर के संग में विशेष रूप से आलाप किया है।

''किन्तु उन्हें लाभ करने के लिए एक विशेष भाव का आश्रय करना चाहिए। शान्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य अथवा मधुर।

''शान्त— ऋषियों का था। उनकी अन्य कुछ भोग करने की वासना नहीं थी। जैसी पत्नी की पति के ऊपर निष्ठा होती है, वह जानती है मेरा पति कन्दर्प है।

''दास्य— जैसे हनुमान का। राम का काम करने के लिए सिंह-तुल्य। स्त्री का दास्य भाव होता है— पति की प्राणपन से सेवा करना। माँ का कुछ-कुछ होता है— यशोदा का था।

''सख्य— मित्र का भाव— आओ, आओ, निकट आकर बैठो। श्रीदाम आदि कृष्ण को कभी झूठे फल खिलाते, कभी कन्धे पर चढ़ते।

''वात्सल्य— जैसे यशोदा का। पत्नी का भी कुछ होता है— पति को

प्राण चीर कर खिलाती है। लड़का पेट भर कर खा लेता है, तभी माँ सन्तुष्ट होती है। यशोदा, 'कृष्ण खाएगा' इसलिए मक्खन हाथ में लेकर फिरती रहती है।

''मधुर— जैसे श्रीमती का। पत्नी का भी मधुर भाव होता है। इस भाव के भीतर सब भाव ही हैं— शान्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य।''

मणि— ईश्वर का दर्शन क्या इन्हीं चक्षुओं से होता है?

श्रीरामकृष्ण— उनको चर्मचक्षु से नहीं देखा जाता। साधना करते-करते विशेष एक प्रेम का शरीर हो जाता है। उसके प्रेम के चक्षु, प्रेम के कर्ण होते हैं। उसी चक्षु से उनको देखता है, उसी कान से उनकी वाणी सुनाई देती है। और फिर प्रेम के लिंग-योनि होते हैं।

यह बात सुनकर मणि हो-हो करके हँसने लगे। ठाकुर विरक्त नहीं हुए और फिर कहने लगे।

श्रीरामकृष्ण— इसी प्रेम के शरीर से आत्मा के साथ रमण होता है।

मणि फिर गम्भीर हो गए।

श्रीरामकृष्ण— ईश्वर के प्रति खूब प्यार न आए, तो होता नहीं। खूब प्यार होने पर ही तो चारों ओर ईश्वरमय दिखता है। पाण्डु-रोग अधिक होने पर ही तो चारों ओर पीला दिखाई देगा।

''और फिर तब 'वे ही मैं हूँ' यह विशेष बोध होगा। मतवाले को अधिक नशा होने पर वह कहता है, 'मैं ही काली हूँ।'

''गोपियाँ प्रेमोन्मत्त होकर कहने लगीं, 'मैं ही कृष्ण हूँ'।

''उनका रात-दिन चिन्तन करने पर उनको चारों ओर देखता है— जैसे प्रदीप की शिखा की ओर एकटक देखते रहें, तो फिर थोड़ी देर पीछे चारों ओर शिखामय दिखाई देता है।''

(ईश्वर-दर्शन क्या मस्तिष्क की भूल है ? 'संशयात्मा विनश्यति')

मणि सोचते हैं कि यह शिक्षा तो वास्तविक शिक्षा नहीं है।

ठाकुर अन्तर्यामी, कहते हैं—

''चैतन्य का चिन्तन करने पर अचैतन्य नहीं होता। शिवनाथ ने कहा था, ईश्वर का एक सौ बार चिन्तन करने से सिर घूम जाता है। मैंने उससे कहा, चैतन्य का चिन्तन करने से क्या अचैतन्य होता है ?

मणि— जी, समझा। यह तो अनित्य के किसी विषय का चिन्तन नहीं ? जो नित्य चैतन्य स्वरूप हैं, उनमें मन लगाने पर मनुष्य अचैतन्य क्यों होगा ?

श्रीरामकृष्ण *(प्रसन्न होकर)*— यही तो है उनकी कृपा! उनकी कृपा न हो तो सन्देह-भंजन नहीं होता।

''आत्मा का साक्षत्कार बिना हुए सन्देह-भंजन नहीं होता।

''उनकी कृपा होने पर फिर भय नहीं रहता। बाप का हाथ पकड़ कर जाने पर भी चाहे लड़का गिर सकता है। किन्तु लड़के का हाथ यदि बाप पकड़ ले तो फिर भय नहीं। वे कृपा करके यदि सन्देह-भंजन कर दें और दर्शन दे दें, तो और कष्ट नहीं रहता। तब भी उनको पाने के लिए खूब व्याकुल होकर पुकारते-पुकारते, साधना करते-करते तब फिर कृपा होती है। बच्चे को बहुत भाग-दौड़ करता देखकर ही माँ की दया होती है। माँ छिपी हुई थी, सामने आकर दर्शन दे देती है।''

मणि सोचते हैं वे भाग-दौड़ क्यों करवाते हैं ? ठाकुर झट कहते हैं,

''उनकी इच्छा है कि कुछ भाग-दौड़ हो; तभी तो आमोद होता है। उन्होंने लीला के लिए इस संसार की रचना की है। इसी का नाम है महामाया। तभी उसी शक्तिरूपिणी माँ के शरणागत होना चाहिए। माया-पाश में बाँध रखा है। इस पाश का छेदन कर सकने पर ही तब ईश्वर-दर्शन हो सकता है।''

(आद्याशक्ति, महामाया और शक्ति-साधना)

श्रीरामकृष्ण— उनकी कृपा पाने के लिए आद्याशक्ति-रूपिणी उनको प्रसन्न रखना चाहिए। वे ही माहामाया हैं। जगत को मुग्ध करके सृष्टि, स्थिति, प्रलय करती हैं। उन्होंने बेहोश करके रखा हुआ है। वही महामाया जब द्वार छोड़ देती हैं, तब अन्दर जाया जाता है। बाहर पड़े रहने पर बाहर की ही वस्तु केवल दिखाई देती है। उस नित्य सच्चिदानन्द पुरुष को नहीं जाना जा सकता। तभी तो पुराण में कथा है— चण्डी में मधुकैटभ*-वध के समय ब्रह्मा आदि देवता महामाया का स्तव करते हैं।

''शक्ति ही जगत की मूलाधार हैं। उसी आद्याशक्ति के भीतर विद्या और अविद्या दोनों हैं।

''अविद्या मुग्ध करती है। अविद्या— जिससे कामिनी-काञ्चन होते हैं, जो मुग्ध करते हैं।

''विद्या— जिससे भक्ति-दया-ज्ञान-प्रेम होता है, जो ईश्वर के पथ पर ले जाती है।

''उस अविद्या को प्रसन्न करना होगा। इसीलिए शक्ति की पूजा-पद्धति है।

''उनको प्रसन्न करने के लिए नाना भावों में पूजा है। दासी भाव, वीर भाव, सन्तान-भाव। वीर-भाव— अर्थात् रमण द्वारा उनको प्रसन्न करना।

''शक्ति-साधना— समस्त ही बहुत अधिक उत्कट साधना थी, चालाकी नहीं।

''मैं माँ के दासी-भाव में, सखी-भाव में दो वर्ष था। मेरा किन्तु सन्तान-भाव है। स्त्रियों के स्तन मातृ-स्तन सोचता हूँ।

''एक-एक स्त्री शक्ति का रूप है। पश्चिम में (बंगाल के पश्चिम में उत्तर प्रदेश आदि) विवाह के समय वर के हाथ में छुरी रहती है, बंगाल में सरौता रहता है; अर्थात् उसी शक्तिरूपा कन्या की सहायता से वर मायापाश-

---

* त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कार स्वरात्मिका।
सुधात्वमक्षरे नित्ये त्रिधामात्रात्मिका स्थिता॥ — चण्डी— मधुकैटभ-वध

छेदन करेगा। यह है वीर–भाव। मैंने वीर–भाव से पूजा नहीं की। मेरा सन्तान–भाव है।

''कन्या शक्तिरूपा है। विवाह के समय देखा नहीं! वर बुद्धु–जैसा पीछे बैठा रहता है, कन्या किन्तु नि:शंक होती है।''

(दर्शन के पश्चात् ऐश्वर्य भूल जाता है,
नाना ज्ञान, अपरा विद्या 'Religion and Science'—
सात्त्विक और राजसिक ज्ञान)

श्रीरामकृष्ण— ईश्वर–लाभ कर लेने पर उनका बाहरी ऐश्वर्य, उनका जगत का ऐश्वर्य भूल जाता है। उनको देख लेने पर उनका ऐश्वर्य स्मरण नहीं रहता। ईश्वर के आनन्द में मग्न होने पर भक्त का फिर और हिसाब नहीं रहता। नरेन्द्र को देख लेने पर, 'तेरा नाम क्या है, तेरा घर कहाँ है'— इन सब बातों के पूछने की आवश्यकता नहीं रहती। पूछने का अवसर ही कहाँ? हनुमान को एक व्यक्ति ने पूछा था, आज कौन–सी तिथि है? हनुमान ने कहा— भाई, मैं वार, तिथि, नक्षत्र— ये सब कुछ नहीं जानता, मैं तो केवल 'राम'–चिन्तन करता हूँ।